Post-EventReport

Event	संवाद
Topic	शख़्सियत से मुलाक़ात
Organizer	हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन'
Date	29/12/2021
Time	04:30 सांध्य
Duration	02:00 बजे
Place/Platform	गूगल मीट
Number of Participants	30
Guest Speaker/Trainer	प्रो. प्रेम सिंह
Welcome Speech	महेंद्र प्रताप सिंह
Introduction to the Speaker	महेंद्र प्रताप सिंह

Activities

नई दिल्ली, 29 दिसंबर, 2021, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा ‘आज़ादी के अमृत महोत्सव’ के उपलक्ष्य में 'शख़्सियत से मुलाक़ात' शृंखला को प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कवि और आलोचक प्रो. प्रेम सिंह रहीं। कार्यक्रम की शुरुआत कार्यक्रम संयोजक ‘महेंद्र प्रताप सिंह’ ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ किया। जिसके बाद हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार ऑनर्स के द्वितीय वर्ष के छात्र हिमांशु ने

प्रो. प्रेम सिंह से वार्तालाप किया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी एवं शिक्षकों द्वारा प्रो. प्रेम सिंह से पूछे गए प्रश्नों का जबाब उन्होंने बड़ी बारीकी एवं सकारात्मकता के साथ दिया। अपने वक्तव्य से उन्होंनें सभी को उत्साह से भर दिया। कार्यक्रम के दौरान कॉलेज के सभी विभागों के प्राध्यापक व विद्यार्थी मौजूद थे। अंत में विभाग प्रभारी डॉ. अंजु बाला ने प्रो. प्रेम सिंह के प्रभाव और सहयोग की बात करते हुए औपचारिक रूप से सबका धन्यवाद किया।

Main Ideas

प्रो. प्रेम सिंह ने अपने जीवन से जुड़े कई बातों को बताया। अपने आस पास के माहौल और परिवेश की चर्चा की। जीवन के नए बिम्बों को उजागर करते हुए सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जीवन एक यात्रा की तरह है। जिसमें अनगिनत सवाल होते हैं और जिसे हमें पॉजिटिव रहकर ही ढूंढ सकते हैं। इसके बाद उन्होंने कहा कि समाज मे बड़े बड़े आलोचक और विचारक हुए। परंतु कौन उनकी बातों को किस प्रकार लेता है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। व्यक्ति उसे सकारात्मक तौर पर भी ले सकता है और नकारात्मकता के रूप में भी ले सकता है। या पूर्ण रूप से समाज और व्यक्ति पर निर्भर करता है। बड़े बड़े लोगों ने अपने ज्ञान और उसके पक्ष को रखा पर कई बार हम ही उसे नकार देते हैं। ऐसे में हम ज्ञान को कैसे पाएँगे। इसलिए सकारात्मक होना जरूरी है। आज विमर्श बदल रहे हैं। जो जीवन के प्रत्येक पक्ष में देखा जा सकता है। जैसे स्त्री सजना संवारना चाहती है वैसे आज पुरूष

सजना चाहते हैं। स्त्री विमर्श ही नहीं बल्कि आज पुरूष विमर्श भी सामने आ रहा है। जिसमें स्त्री पुरुष में सामंजस्य महत्वपूर्ण हो गया है। यह सामंजस्य पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक रूप में भी होना चाहिए।

अपनी जीवन यात्रा की बात करते हुए वह कहतीं है कि मैं पैदा ही शिक्षका हुई। प्रारंभ में मैंने स्कूल स्तर पर पढ़ाया फिर बाद में मैंने महाविद्यालय स्तर पर पढ़ाया। विद्यार्थियों के साथ प्यार से रहना पड़ता है। उन्हें दंड भी देना है तो उचित दंड देना है जिससे वह शिक्षा पा सकें। समाज और उसका विकलांगों के प्रति नजरिए की बात करते हुए वह कहती है कि समाज का नज़रिया विकलांगों के प्रति बुरा नहीं है और अगर बुरा है तो नज़रिया कौन बदलेगा? हम जब उनके नज़रिया को बदलेंगे तो समाज के लोग भी बदलेंगे। एक सकारात्मक भाव रखो तभी जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। जीवन हर कदम कुछ नया सिखाता है और जिसे सीखने के लिए हमें तैयार रहना पड़ेगा। कोई अगर आलोचना कर रहा है तो उसे करने देना चाहिए क्योंकि इससे हमारा ही परिमार्जन होता है।

Vote of thanks	डॉ. अंजु बाला

Attendance and Feedback link

Poster (Attach below)

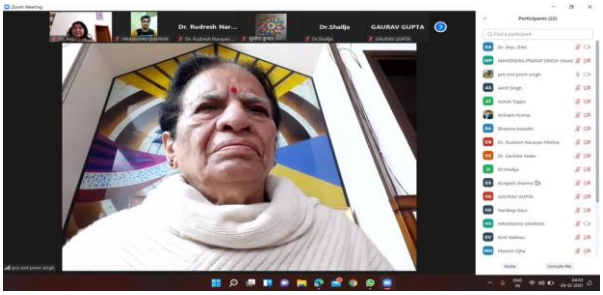

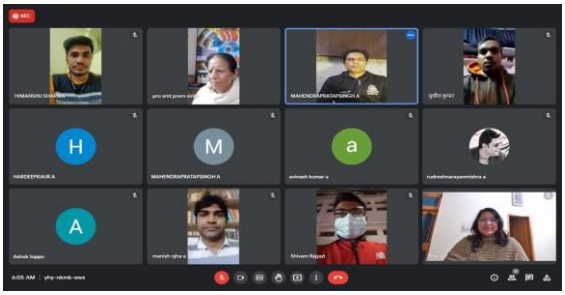

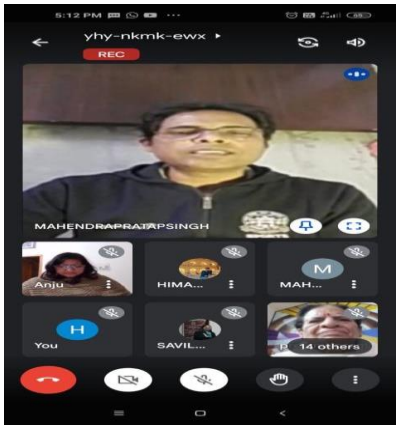

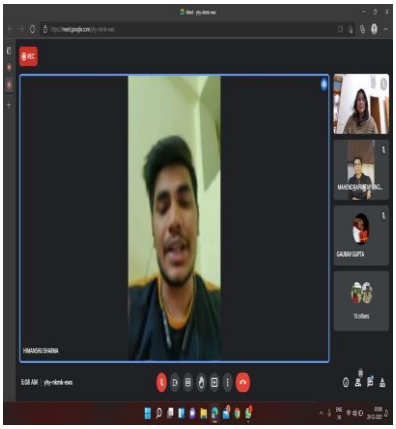

Pictures (Attach Five Photos)
Attach Photocopy of two Certificates

Signature:

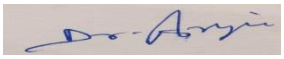

Name: डॉ. अंजु बाला

(Convenor)